AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

हसरत मोहनी के ''तीन एम'' का सिद्धांत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
डॉ. सुकल्याण मोइत्रा
शोध निदेशक
नजराना परवीन
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

हसरत मोहानी आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। उनकी विचारधारा में धार्मिक आस्था, राष्ट्रवाद और समाजवादी चेतना का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। उनके विचारों पर गंगा–जमुनी तहजीब की छाप दृष्टिगोचर होती है। उनका राजनीतिक चिंतन और उनका संपूर्ण जीवन तीन एम मक्का, मथुरा और मॉस्को के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए व्यतीत हुआ। मक्का से उन्हें आध्यात्मिक मूल्य, नैतिकता, सामाजिक न्याय और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा मिलती है। मथुरा से उन्हें भारतीय सांस्कृतिक बहुलता, सहिष्णुता, विविधता में एकता की प्रेरणा मिलती है। मथुरा श्री कृष्ण के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है। मॉस्को उनके समाजवादी दृष्टिकोण, सामाजिक और राजनीतिक समानता के साथ–साथ आर्थिक समानता, श्रमिक अधिकारों की अभिप्रेरणा देता है। यह साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विरोध करता है। हसरत की नीति समन्वयवादी थी। उनके तीन एम का सिद्धांत सर्वधर्म समभाव पर आधारित था। उनका चिंतन सामाजिक न्याय, धार्मिक सह–अस्तित्व, लोकतांत्रिक सांस्कृतिक एकता, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की स्थापना करने के लिए आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द

हसरत मोहानी, मक्का, मथुरा, मास्को, राष्ट्रवाद, धार्मिक सहिष्णुता.

भूमिका

सैयद फजलुल हसन हसरत मोहानी आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के उन नाम में शामिल है जिन्होंने भारत की विविधता में एकता की विचारधारा को संवर्धित किया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक न्याय, स्वदेशी जैसे आदर्श को प्रोत्साहित किया। हसरत स्वतंत्रता सेनानी और उर्दू के प्रसिद्ध शायर होने के साथ–साथ राजनीतिक विचारक भी थे। उनका संपूर्ण राजनीतिक चिंतन तीन एम मक्का, मथुरा और मॉस्को पर आधारित था। यह सिद्धांत उनकी समन्वयवादी नीति का प्रतीक है जिसमें धार्मिक आस्था, भारतीय राष्ट्रवाद और समाजवाद का सुंदर मेल दिखाई देता है। हसरत के तीन एम के सिद्धांत में पहला मक्का उनका विश्वास था, दूसरा एम मथुरा उनका प्रेम और तीसरा एम उनके राजनीतिक विचारों की आधारशिला थी।[1]

हसरत के तीन एम के सिद्धांत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हसरत मोहानी के तीन एम की विचारधारा का विश्लेषण करने के लिए हमें उनकी विचारों के पीछे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्थ और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारत के सामाजिक

आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन का दौर था। भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और इसकी स्वतंत्रता के लिए आंदोलन गति पकड़ चुका था। भारत में आधुनिक राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन का विकास राष्ट्रीय आंदोलन और उसके बाद की राजनीतिक आर्थिक परिस्थितियों की उपज है।[2] इसी काल में विश्व में दो बड़ी शक्तियां अपनी–अपनी विचारधारा पूंजीवाद और समाजवाद को लेकर खड़ी थी। 1917 की रूसी क्रांति ने अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में समाजवाद को नई गति प्रदान की। आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारक जैसे सुभाष चंद्र बोस, पंडित जवाहरलाल नेहरू, पी. सी. जोशी, एम. एन. राय आदि रूसी क्रांति से प्रभावित हुए। हसरत मोहानी के विचारों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने आर्थिक न्याय श्रमिकों के अधिकारों का खुलकर समर्थन किया। उन्होंने समाजवाद की व्याख्या भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर की।

हसरत धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वह अपने धर्म से गहराई से जुड़े थे। उनके लिए इस्लाम केवल आस्था का विषय नहीं था बल्कि जीवन जीने का सिद्धांत था। उन्होंने इस्लाम से अदल (न्याय), शूरा (परामर्श), समानता, दया, लोक–कल्याण जन–सहभागिता आदि शिक्षाओं को अपनी विचारधारा में सम्मिलित किया। उनके लिए धर्म केवल किसी धार्मिक प्रवृत्ति का नाम नहीं बल्कि मनुष्य का नैतिक विकास, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय है।

हसरत राष्ट्रवादी थे। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था। उनका विचार था कि अगर भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई को सफल बनाना है तो सभी धर्म और समुदायों के लोगो, स्त्रियों और पुरुषों को मिलकर संघर्ष करना होगा। वह भारतीय संस्कृति में रंगे हुए ''मौलाना'' थे। उन्हें जितना विश्वास मक्का पर था उतना ही प्रेम मथुरा से था। उन्होंने श्री कृष्ण की नगरी मथुरा को सांस्कृतिक समन्वय तथा राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार हसरत के तीन एम का सिद्धांत समन्वयवादी राजनीतिक दृष्टि का परिणाम है।

नैतिकता, आध्यात्मिकता और न्याय का प्रतीकः मक्का

हर मुस्लिम व्यक्ति के जीवन में मक्का (मक्का अल मुकर्रम) महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह इस्लाम का सबसे पवित्र शहर है। यह पश्चिमी सऊदी अरब के हिजाजी में स्थित है। यहां इस्लाम का उदय हुआ और यही पैगंबर मोहम्मद का जन्म स्थान है। मक्का केवल एक धार्मिक महत्व का शहर नहीं बल्कि आध्यात्मिकता नैतिकता, समानता, त्याग, बंधुत्व, मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। हसरत ने अपने जीवन में और चिंतन में मक्का के इन मूल्यों को अपनाया।

हज मक्का शहर की वार्षिक धार्मिक तीर्थ यात्रा है। यह यात्रा हर समर्थ मुसलमान के लिए अनिवार्य कर्तव्य है।

हर वर्ष लाखों मुसलमान हज की यात्रा करते है। हसरत ने भी अनेक बार हज यात्रा की। वे सूफी विचारधारा वाले व्यक्ति थे।[3] हसरत धार्मिक ऐतबार से हनफी थे और कादरी मत को मानते थे। उन्होंने खुद कहा है ''मैं कदामत परस्त (परंपरावादी) सुन्नी और सूफी हूँ।''[4] हसरत मोहानी महात्मा गांधी जी की भांति धर्म और राजनीति एक दूसरे का पूरक मानते थे। धर्म का तात्पर्य यहां किसी विशेष धार्मिक संप्रदाय (हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई आदि) नहीं बल्कि सत्य, नैतिकता, न्याय मानव सेवा से है। हसरत की राजनीतिक विचारधारा का आधार इस्लाम था। शोषण का विरोध करना, सामाजिक न्याय और समानता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, जनसेवा, लोककल्याण आदि विचारों को उन्होंने इस्लाम से ग्रहण किया। हसरत की धार्मिक विचारधारा के दो पक्ष थे पहला पक्ष में इस्लाम की शिक्षाओं को अपना कर राजनीति में अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने की और अग्रसर करता है तो दूसरा पक्ष उन्हें अन्य धर्म के प्रति सम्मानपूर्ण और सहिष्णु बनाता है। वह एक सच्चे राष्ट्रवादी थे और भारत की बहुधार्मिक, बहुसांस्कृत्तिक परंपरा को आत्मसात करते थे। वह सभी को साथ लेकर चलने के पक्षधर थे। यही कारण है कि उनके राजनीतिक चिंतन में धार्मिक आस्था और राष्ट्र एकता के बीच कोई विरोध नहीं दिखता।

सांप्रदायिक सद्भाव, गंगा–जमुनी तहजीब और भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतीकः मथुरा

मथुरा भारत के प्राचीनतम नगरों में से एक है। यह यमुना नदी के किनारे बसा है और श्री कृष्ण की जन्म भूमि है। मथुरा भारत की प्राचीन संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। हसरत मोहानी के लिए मथुरा केवल एक धार्मिक स्थल नहीं बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद का सांस्कृतिक आधार था। उनका विचार था कि अगर भारत को गुलामी की जंजीरों से आजाद करना है तो सभी समुदायों को मिलकर कार्य करना होगा। मधुरा और श्री कृष्ण के प्रति उनका प्रेम इसी समन्वयवादी विचारधारा का रूप था। मौलाना एक पक्के और रोशन ख्याल (प्रबुद्ध) मुसलमान थे। वह श्री कृष्ण को अकिदत के नज़राने (भक्ति भेंट) पेश करने मथुरा भी जाते और हज करने खाने काबा भी।[5] हसरत श्री कृष्ण को 'हज़रत कृष्ण अलैहिररहमों' कहते थे।[6]

हसरत तिलक की विचारधारा से प्रभावित थे और उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।[7] उन्होंने तिलक द्वारा रचित गीता रहस्य का अध्ययन किया। उन्होंने इस संबंध में लिखा हैः

हर हिंदू का मजबूत है जी
गीता की यह बात है दिल पर लिखी
आखिर में जो खुद भी कहा यही
फिर आएंगे महाराज तिलक[8]

गीता रहस्य में टीका लिखते समय तिलक ने कर्म के मार्ग पर ज्यादा जोर दिया और कर्म के मार्ग पर जोर देना हसरत के दिल को प्रभावित कर गया। संभवतः यही कारण है कि उन्हें श्री कृष्ण से प्रेम हो गया और यही कारण है कि उनके जीवन में और उनके विचारों में श्री कृष्ण की मथुरा का इतना महत्व है।[9]

हसरत का मानना था कि भारत में विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ निवास ही नहीं करते बल्कि उनका एक सांझा इतिहास, संस्कृति और सभ्यता है। यह एक समान राष्ट्रीय चेतना से निर्मित एक राष्ट्र है। उनका मानना था कि धार्मिक भिन्नताएं राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के में बाधा नहीं बननी चाहिए।

हसरत मोहानी ने अपने राजनीतिक जीवन में सांप्रदायिक राजनीति का विरोध किया। वह अंग्रेजों की फूट डालो शासन करो की नीति से अच्छी तरह परिचित थे और इसका उत्तर 'हिंदू मुस्लिम एकता' से देना चाहते थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में सभी समुदायों की भागीदारी पर बल दिया।

मथुरा हसरत के चिंतन में भारतीय राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक समन्वय, धार्मिक सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। श्री कृष्ण के प्रति उनकी निष्ठा यह दर्शाती है कि वह केवल दिखावटी रूप से हिंदू मुस्लिम एकता की बात नहीं करते बल्कि उन्हें इन सिद्धांतों को अपने जीवन में, अपने हृदय में आत्मसात किया। मथुरा के प्रति उनका प्रेम उनकी निम्नलिखित शायरी में प्रदर्शित होता हैः

मथुरा नगर है आशिकी का,
दम भरते हैं आरजू इसी का।
हर जर्रा ज़मीं–ए–गोकुल,
वारा है जमाल–ए–दिलबरी का।
बरसाना और नंदीगांव में कभी,
देख आए हैं हम जलवा किसी का।
सुरमा है चश्म–ए–आरजू का।
हर नगमा बासुरी का, पैग़ाम–ए–हयात–ए–जाविदानी का।
वह नूर–ए–सियाह था कि 'हसरत',
हर चश्मा–ए–फ़िरंगी आगही का।[10]

समाजवाद, आर्थिक न्याय और किसान–मजदूर हितों का प्रतीकः मॉस्को

20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में वैचारिक उथल–पुथल का समय रहा पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद जैसी विचारधाराओं के आधार पर देश के बीच रिश्ते बनते और बिगड़ते दिखाई पड़े। सन् 1917 की बोल्शेविक क्रांति ने विश्व राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला। इस क्रांति के फलस्वरुप उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के विरुद्ध समाजवाद का जन्म हुआ। हसरत मोहानी के विचारों में इस क्रांति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। हसरत केवल राजनीतिक रूप से स्वतंत्र भारत की कल्पना नहीं करते बल्कि आर्थिक रूप से सशक्त राष्ट्र की कल्पना करते हैं। वह समाज में आर्थिक असमानता और शोषण का अंत चाहते हैं। मास्को रूस की राजधानी है। हसरत के लिए मास्को समाजवाद, आर्थिक समानता, मजदूर हित की आवाज, शोषण मुक्त समाज का प्रतीक था। उन्होंने सामाजिक न्याय के साथ–साथ आर्थिक न्याय को भी राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आवश्यक माना।

हसरत मोहानी और उनके समकालीन मौलाना आजाद सुभानी इस्लाम और समाजवाद को एक सिक्के के दो पहलू मानते थे। समाजवाद के मूल सिद्धांत जैसे जमीदारी–विरोध, पूंजीवाद–विरोध, समानता, इस्लाम का भी केंद्रीय सिद्धांत है। हसरत

मोहानी स्वयं को कम्युनिस्ट मुस्लिम मानते थे। उन्होंने इस्लामी समाजवाद की विचारधारा को प्रोत्साहित किया उनका मानना था की इस्लाम का सच्चा मूल्य इस विश्वास में निहित है कि कोई भी भूखा ना रहे। इस्लाम और समाजवाद दोनों ही अत्यधिक धन संचय से रोकते हैं और संपत्ति के समान वितरण पर बल देते हैं।

हसरत मोहानी पूंजीवाद के आलोचक थे और पूंजीवाद को आर्थिक शोषण का आधार मानते थे। सन् 1917 की रूसी क्रांति ने साम्यवादी विचारधारा को पूरे संसार में फैला दिया। रूसी क्रांति का भारत में स्वागत करने वाले पहले नेता लोकमान्य तिलक थे। हसरत जो तिलक के अनुयाई थे। उन्होंने सन् 1925 के अंत में कानपुर में पहली ऑल इंडिया कम्युनिस्ट कॉन्फ्रेंस की स्थापना करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[11] हसरत अपने साम्यवादी चिंतन में किसी वर्ग संघर्ष या वर्ग विहीन समाज की कल्पना नहीं करते। वह तो एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना करते हैं जहां प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर, समान सम्मान, और न्याय प्राप्त हो।

तीन एम का समन्वय

हसरत मोहानी ने अपने वैचारिक सिद्धांत मक्का मथुरा और मॉस्कों में तीन परस्पर विरोधी तत्वों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। उनके राजनीतिक चिंतन में, मक्का धार्मिक आस्था, मथुरा भारतीय राष्ट्रवाद और मॉस्को समाजवाद को दर्शाता है। हसरत ने इन तीनों विचारों के बीच ऐसा संतुलन स्थापित किया जो उन्हें आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में विशेष स्थान प्रदान करता है।

मक्का उनके लिए नैतिकता, विश्वास और सामाजिक न्याय का आधार है। उनके लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं बल्कि समाज में व्याप्त बुराइयों, छुआछूत, कुरीतियों का अंत, और सामाजिक न्याय, लोक कल्याण की स्थापना करना है। उन्होंने धर्म को नैतिक प्रेरणा के रूप में देखा ना कि सांप्रदायिक विभाजन के रूप मथुरा को उन्होंने राष्ट्रीय एकता और धार्मिक सहअस्तित्व का प्रतीक माना। उनके लिए राष्ट्रवाद धार्मिक कट्टरता और सांप्रदायिकता से ऊपर था। उन्होंने मथुरा को समन्वयवाद का केंद्र माना। उनका मानना था कि राष्ट्रवाद किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं है।

मॉस्को सामाजिक और आर्थिक न्याय का प्रतीक है। हसरत मोहानी ने राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ आर्थिक स्वतंत्रता को भी महत्वपूर्ण माना। जब तक आर्थिक असमानता, शोषण और गरीबी समाप्त नहीं होती तब तक वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती।

समकालीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में हसरत के तीन एम के सिद्धांत की प्रासंगिकता

धर्म, राष्ट्रवाद और समाजवाद जैसी अलग–अलग प्रवृत्ति की विचारधाराओं को एक साथ समाविष्ट कर उन्हें जीवंत रूप प्रदान करना हसरत के राजनीतिक चिंतन की मौलिकता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि इन तीनों विचारधाराओं को व्यावहारिक रूप में एक साथ लाना कठिन है क्योंकि प्रत्येक की अपनी अलग–अलग पृष्ठभूमि और प्राथमिकताएं है।

हसरत अपने समय से बहुत आगे की सोचते थे। उन्होंने अनुच्छेद 370 जिसे तब अनुच्छेद 306 ए के रूप में क्रमांकित किया गया था, का विरोध करते हुए कहा कि कश्मीर को विशेष प्रावधान देने की क्या आवश्यकता है? संविधान सभा में स्पष्ट रूप से उन्होंने पूछा 'यह भेदभाव क्यों?' जब आप कश्मीर के लिए यह सभी रियायतें देते हैं तो मै बडौदा राज्य को बॉम्बे में विलय करने के लिए मजबूर करने के आपके मनमाने कृत्य पर सबसे अधिक आपत्ति जताता हूं।[12]

मौलाना हसरत मोहानी जिन्होंने अनुच्छेद 370 का विरोध किया, कृष्ण से प्रेम किया, एक मशहूर गज़ल चुपके–चुपके रात दिन आंसू बहाना याद है लिखी और इंकलाब जिंदाबाद जैसा बुलंद नारा लिखा, स्वदेशी का प्रचार किया और विदेशी माल का बहिष्कार किया, पूर्ण स्वराज की मांग रखी। वे आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 द्वारा अनुच्छेद 370 का निरस्त हो जाना उनकी वैचारिक प्रासंगिकता की पुष्टि करता है। हसरत उन मुस्लिम नेताओं में से एक थे जिन्हें हिंदुस्तान से बहुत प्रेम था। उन्होंने जिन्ना के दो राष्ट्र सिद्धांत का विरोध किया। हिंदुस्तानी के रूप में उन्होंने जन्म लिया और अपने अंतिम सांस तक हिंदुस्तानी ही रहे। वह हिंदू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे।

वर्तमान समय में भारत बढ़ती हुई सांप्रदायिक भावना, कमजोर आर्थिक स्थिति, भ्रष्टाचार, केंद्र द्वारा भारतीय राज्य के संघीय स्वरूप को कमजोर करना, बेरोजगारी, पूंजीवाद के प्रसार और गरीबी भुखमरी में वृद्धि की यह मांग है कि हसरत मोहानी के राजनीतिक चिंतन का अध्ययन किया जाए। उनके विचारों कार्यों और जीवन को अपनाया जाए।

निष्कर्ष

हसरत मोहानी का मक्का, मथुरा और मॉस्को का सिद्धांत आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन की एक मौलिक देन है। इसमें नैतिकता, राष्ट्रवाद और समाजवाद का ऐसा संतुलित समन्वय है जो भारतीय समाज की विविधता और उसकी आवश्यकता के अनुरूप है। यह अवधारणा केवल स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि वर्तमान समय में भी सामाजिक सद्भाव, लोकतांत्रिक मूल्यों और आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए प्रेरणादायक है।

संदर्भ सूची

1. दुबे, गीतिका. (2022, 3 मई) आखिर क्या थे हसरत मोहानी के ये 3 खास एम. नवभारत टाइम्स. https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/spirituality/motivational-stories/moral-story/of-hasrat-mohani/articleshow/91288090.cms, Accessed on 03/08/2025.
2. फड़िया, बी. एल. (2024) *भारतीय राजनीतिक चिंतन* (संशोधित संस्करण). साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 99।
3. ख़ाँ, एम. हबीब. (1997) *भारतीय साहित्य के निर्माताः हसरत मोहानी* (अ. ज़ैदी, अनुवाद). साहित्य अकादेमी. नई दिल्ली, पृ. 8।
4. अब्दुश्शुकूर (1954) *हसरत मोहानीः सवानेह–ए–हयात, तबसरा, मुवाज़ना वा इंतिखाब–ए–कलाम.* अनवर बुक डिपो, लखनऊ, पृ. 31।
5. सिद्दीकी, नफीस अहमद (1998) *हसरत मोहानी और इंक़िलाब–ए–आज़ादी.* खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पृ. 85।
6. महली, शाहिद (संपा.) (2013) *हसरत मोहानीः हयात–ओ–खिदमात.* ग़ालिब इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली, पृ. 305।
7. हनफ़ी, म. (2012) *हसरत मोहानी* (मौलाना निज़ामुद्दीन, अनुवादक), नेशनल बुक ट्रस्ट, पृ. 21।
8. महली, शाहिद (संपा.) (2013) *हसरत मोहानीः हयात–ओ–खिदमात.* ग़ालिब इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली, पृ. 306।
9. महली, शाहिद (संपा.) (2013) *हसरत मोहानीः हयात–ओ–खिदमात.* ग़ालिब इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली, पृ. 307।
10. महली, शाहिद (संपा.) (2013) *हसरत मोहानीः हयात–ओ–खिदमात.* ग़ालिब इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली, पृ. 308।
11. हनफ़ी, म. (2012) *हसरत मोहानी* (मौलाना निज़ामुद्दीन, अनुवादक), नेशनल बुक ट्रस्ट, पृ. 51।
12. Jansatta (2023, December 31) मौलाना हसरत मोहानीः जिन्होंने अनुच्छेद 370 का विरोध किया, कृष्ण से प्रेम किया और एक मशहूर ग़जल लिखी. https://www.jansatta.com/jansatta-special/maulana-hasrat-mohani-who-opposed-article-370-loved-krishna-and-wrote-a-famous-ghazal/3143780/, Accessed on 15/10/2025.

——==00==——